प्रसाद बाँटना किसी को कम किसी को ज्यादा

सुथरे शाह जी बचपन से ही जहाँ हंसमुख एवं विनोदप्रिय थे वहीं पर वे गूढ़ एवं रहस्यवादी भी थे। वे अपने माता पिता एवं गुरु श्री हरगोबिन्द साहिब जी के हर उपदेश एवं आचरण को अपने में ढालने की कोशिश करते। गुरु जी की प्रत्येक क्रिया उनके लिए शिक्षाप्रद थी। गुरु जी के दरबार में हर रोज लंगर चलता था। कई लोग लंगर की सेवा करते। जिनमें सुथरा जी भी थे। वे भी प्रसाद बाँटते परन्तु यह क्या?

सुथरे जी जब भी प्रसाद बाँटते किसी को ज्यादा देते तो किसी को कम। संगत को बुरा लगता। एक दिन कुछ संतों ने मिलकर गुरु जी से शिकायत की। 'आपका लाडला सुथरा' जब भी प्रसाद बाँटता है तो किसी को कम देता है तो किसी को ज्यादा देता है। उसे प्रसाद बाँटना ही नहीं आता कि कैसे सबको बराबर प्रसाद बाँटा जाए।

गुरु जी ने 'सुथरे' को बुलाया और सबके सामने पूछा - पुत्तर, सभी तेरी शिकायत करते हैं कि तू किसी को ज्यादा प्रसाद देता है तो किसी को कम। तू ऐसा क्यों करता है? सबको बराबर प्रसाद क्यों नहीं देता। सुथरे शाह जी

ने कहा - 'मेरे दातार, यहाँ तो रोज़ ही पाठ होता है, ईश्वर अपने कर्मानुसार ही सबको फल देता है। कोई जन्म से ही गरीब घर में पैदा होता है तो कोई अमीर घर में। एक बालक को जन्म लेते ही ऐशों आराम की ज़िन्दगी मिलती है तो दूसरे को सूखी रोटी भी नसीब नहीं होती। एक मनुष्य जन्म लेते ही अन्धा, पंगु या रोगी होता है तो दूसरी ओर एक कुत्ता भी ऐशो आराम की ज़िन्दगी व्यतीत करता है। मैं भी आपके द्वारा कही हुई बातों का अनुसरण कर प्रसाद बाँटता हूँ। पर ये कैसे संत है जो मात्र प्रसाद के लिए ही आपके पास शिकायत करने आ गए।'

जिनकी सुरती प्रसाद में, क्या भजेंगे नाम।
सुथरे शाह सन्तोष बिन बिगड़ जायेंगे काम।।

गुरु जी ने अपने लाडले की बातें सुनकर उन्हें गले से लगा लिया व शिकायत करने आए संत भी चुपचाप वहाँ से खिसक गए।